लोकमान्य बाल गंगाधर तिलक

लोक सभा सचिवालय
नई दिल्ली
2019

लोकमान्य बाल गंगाधर तिलक

बाल गंगाधर तिलक एक महान राष्ट्रवादी, समाज सुधारक और जन नेता थे जिन्होंने अपने मत और विचारों से अनेक पीढ़ियों को प्रभावित किया। उन्होंने स्वतंत्रता आंदोलन के दौरान राजनीतिक जन चेतना जागृत करने में मुख्य भूमिका निभाई। वह स्वराज (सेल्फ रूल) के प्रबल समर्थकों में से थे। उनके प्रसिद्ध नारे, ''स्वराज मेरा जन्मसिद्ध अधिकार है और मैं इसे लेकर रहूंगा'' ने भारत के स्वतंत्रता आंदोलन के दौरान लाखों लोगों को प्रेरित किया। तिलक एक महान विद्वान और दूरद्रष्टा थे, जिन्हें राष्ट्र 'लोकमान्य' के रूप में जानता है।

बाल गंगाधर तिलक का जन्म महाराष्ट्र के रत्नागिरी में 23 जुलाई, 1856 को हुआ था। उनके पिता गंगाधर रामचन्द्र तिलक संस्कृत के विद्वान थे और गंगाधर शास्त्री के नाम से जाने जाते थे। दृढ़ निश्चय, अदम्य इच्छा शक्ति, स्वस्थ मन, अध्यवसाय और उपलब्धि की क्षमता और सुव्यवस्थित तरीके से कार्य करने की विशेषताएं तिलक को अपने पिता से विरासत में प्राप्त हुई थीं।

बाल गंगाधर तिलक एक प्रतिभाशाली छात्र थे और उन्होंने अपनी अधिकांश शिक्षा पुणे में प्राप्त की थी। वह तीक्ष्ण बुद्धि, अध्ययन में गहन रुचि, दृढ़ आत्मसम्मान और अन्याय का तीव्र विरोध करने के लिए जाने जाते थे। मैट्रिक के पश्चात् उन्होंने पुणे के दक्कन कॉलेज में प्रवेश लिया। गणित को मुख्य विषय के रूप में लेकर उन्होंने बी.ए. की परीक्षा में प्रथम श्रेणी प्राप्त की और 1879 में कानून की डिग्री प्राप्त की। वह हिंदू धर्मग्रंथों के अच्छे ज्ञाता थे तथा राजनीति और तत्व मीमांसा संबंधी पश्चिमी विचारों से भी काफी प्रभावित थे। उन्हें विशेष रूप से वाल्टेयर, रूसो, हेगेल, कान्ट, स्पेन्सर, मिल और बेन्थम प्रिय थे।

अपनी शिक्षा पूरी करने के बाद तिलक ने सरकारी नौकरी के लाभप्रद प्रस्तावों को ठुकरा दिया और राष्ट्रीय जागृति के महान कार्य के लिए स्वयं को समर्पित करने का निर्णय लिया। उनका दृढ़ विश्वास था कि यदि भारतीय लोगों को शासन और शासित का सिद्धांत, जिसे

अंग्रेज बनाए रखना चाहते थे, स्वीकार न करके स्वयं को ऊंचा उठाना है तो उन्हें आधुनिक शिक्षा स्वयं भारतीयों द्वारा दी जानी चाहिए। उन्होंने अपने तीन मित्रों—जी.जी. अगरकर, एम.ए. चिपलंकर और महादेव बी. नामजोशी के साथ मिलकर 1880 में पुणे में न्यू इंगलिश स्कूल की स्थापना की और बाद में वर्ष 1884 और 1885 में पुणे में क्रमशः दक्कन एजुकेशन सोसायटी और फर्गुसन कॉलेज की स्थापना की।

महाराष्ट्र में तिलक, अगरकर और चिपलंकर नई पीढ़ी के उदीयमान नेता थे जिनकी भारत में नई व्यवस्था स्थापित करने संबंधी आकांक्षाएं, पुरानी पीढ़ी की आकांक्षाओं से कहीं अधिक थीं। शिक्षा के क्षेत्र में कार्य करते हुए उन्होंने 1881 में अंग्रेजी साप्ताहिक पत्रिका 'मराठा' और मराठी साप्ताहिक पत्रिका 'केसरी' नामक दो पत्रिकाएं शुरू कर जनता को शिक्षित करने के कार्य का दायित्व अपने ऊपर लिया। दोनों साप्ताहिक पत्रिकाओं के लिए जनता की उत्साहजनक प्रतिक्रिया प्राप्त हुई।

19वीं शताब्दी के अंतिम दशक में देश के भिन्न-भिन्न भागों में अत्यधिक अशांत स्थिति उत्पन्न हुई और जनता को भीषण कठिनाइयों का सामना करना पड़ा। तिलक ने 1880 में अपनी सामाजिक गतिविधियां शुरू कीं और जनता की मांगों का समर्थन किया तथा अपनी निःस्वार्थ सेवाओं से जनता का हृदय जीत लिया। कठिन परिस्थितियों का सामना करते हुए सामाजिक कार्यकर्ता के रूप में उनकी महत्वपूर्ण पहचान बनी। 19वीं शताब्दी के अंत में अकाल और महामारी से बड़ी संख्या में लोगों की मृत्यु होने और इन आपदाओं को रोकने के लिए सरकार द्वारा अपनाए जा रहे उपाय अपर्याप्त और त्रुटिपूर्ण साबित होने के कारण तिलक ने अपने लेखों और भाषणों द्वारा जनता की कठिनाइयों के प्रति ब्रिटिश प्रशासन के लापरवाहीपूर्ण उदासीन रवैये के प्रति जनता में जागृति पैदा करने के लिए सुधारकों को प्रेरित किया।

वर्ष 1900 से 1908 तक का समय भारत में क्रांतिकारी राष्ट्रवाद के जन्म का समय था। विपिन चन्द्र पाल और लाला लाजपत राय के साथ लोकमान्य तिलक, जिनकी तीक्ष्ण राजनीतिक दूरदृष्टि थी, हमारे राष्ट्रीय आकाश में उभरते सितारों के रूप में सामने आए। इन तीनों—लाल, बाल, पाल ने जनता में एकता के बंधन को मजबूत कर भारतीय

राष्ट्रवाद का समर्थन किया। लोकमान्य तिलक ने यथार्थवाद की अपनी सुदृढ़ भावना के साथ स्वदेशी, बहिष्कार, राष्ट्रीय शिक्षा और स्वराज का चार-सूत्री कार्यक्रम प्रस्तुत किया जिसके माध्यम से लोगों को विभिन्न कार्यकलापों में शामिल किया गया और स्वतंत्रता संघर्ष में उनके योगदान के लिए उन्हें सक्षम बनाया गया।

वर्ष 1907 में तिलक ने 'केसरी' में दो लेख 'दि कन्ट्रीज मिसफार्च्यून' और 'दीज रिमेडीज आर नॉट लास्टिंग', लिखे, जिनमें यह मांग की गई कि सरकार को देश में बदलती परिस्थितियों को समझने का प्रयास करना चाहिए। इन लेखों में सरकार की अत्याचार की नीतियों की कटु आलोचना की गई, जिनके प्रति ब्रिटिश सरकार ने अपना रोष प्रकट किया। तदनंतर, राजद्रोह के आरोप में वर्ष 1908 में उन्हें गिरफ्तार कर लिया गया और छह वर्ष के लिए बर्मा की मांडले जेल में कैद कर दिया गया। मांडले जेल में उन्होंने एक विशद दार्शनिक पुस्तक 'गीता रहस्य' लिखी जिसमें भगवद् गीता का संदेश और जीवन की उनकी अपनी व्याख्या शामिल है।

1914 में मांडले जेल से रिहा होने के बाद तिलक होम रूल आंदोलन से जुड़ गए। जब एनी बेसेंट ने अपनी होम रूल लीग की स्थापना की तब तिलक उनके साथ जुड़ गए। एनी बेसेंट के साथ तिलक ने संयुक्त रूप से जो आंदोलन चलाया, वह उनकी जन-आधारित राजनीति का भाग था। 'होम रूल' का प्रचार करने के लिए उन्होंने एनी बेसेंट के साथ पूरे राष्ट्र का दौरा किया। 1915 में तिलक ने 'हिन्दू स्वराज्य संघ' शीर्षक के अंतर्गत अनेक संपादकीय लिखे जिनके माध्यम से उन्होंने 'होम रूल' की संकल्पना को प्रस्तुत किया और इसे प्राप्त करने की कार्य-योजना भी सामने रखी। वर्ष 1918 में, तिलक ने 'होम रूल लीग' के अध्यक्ष के रूप में इंग्लैंड की यात्रा की और वहां जन सभाओं को संबोधित करके तथा ब्रिटिश लेबर पार्टी के जाने-माने नेताओं से सम्पर्क करके होम रूल लीग आन्दोलन को तेज किया। वह ब्रिटिश लेबर पार्टी का विश्वास जीतने में सफल रहे। वह 1919 में भारत वापस आए और पुनः स्वतंत्रता संघर्ष में कूद पड़े।

राजनीतिक दृष्टिकोण से लोकमान्य तिलक एक क्रांतिकारी थे और उन्होंने अपनी निर्भीकता तथा देश के लिए प्रेम द्वारा पश्चिमी समाज सुधारकों तथा रूढ़िवादी विचारों को चुनौती दी। एक राजनीतिक

यथार्थवादी होने के कारण तिलक जानते थे कि राजनीति का आध्यात्मीकरण स्वराज के उनके सपने को पूरा कर सकता है। एक धर्मपरायण हिन्दू होते हुए भी वह धर्मनिरपेक्षता के मूल सिद्धांतों में विश्वास करते थे और उन्होंने सामाजिक जीवन को धार्मिक नियमों से अलग करने का प्रयास किया। वह हिन्दू-मुस्लिम एकता में विश्वास करते थे और इस बात के प्रति सजग थे कि जब तक देश एक नहीं होगा तब तक विदेशी शासन को समाप्त नहीं किया जा सकता।

स्वतंत्रता संघर्ष, जनता में राजनीतिक चेतना जगाने और उन्हें स्वतंत्रता संघर्ष में शामिल करने में तिलक का महान योगदान रहा। समाज के कार्यकरण के प्रति उनकी विलक्षण अंतर्दृष्टि थी और वह एक ऐसे नेता थे जिन्होंने विदेशी शासन के विरुद्ध संघर्ष में जनता की शक्ति को पूर्ण रूप से पहचाना था। उन्होंने शिवाजी जयंती और गणेश पूजा जैसे कार्यक्रम शुरू किये जिनका प्रमुख उद्देश्य जनता को एकजुट करना था ताकि स्वतंत्रता संघर्ष के प्रति उन्हें जागरूक किया जा सके और इसमें शामिल किया जा सके। संपूर्ण स्वराज हमारा जन्मसिद्ध अधिकार है, संबंधी उनकी मांग, नरम दल के नेताओं द्वारा की जा रही मांगों से बिल्कुल भिन्न थी। उनके भाषण और लेख नये, सशक्त और स्वाग्रही होते थे जो पूरे देश में ऊर्जा का संचार कर देते थे।

लोकमान्य तिलक का संपूर्ण जीवन 'कर्म यज्ञ' था। वह राष्ट्र को निद्रा से जगाने के लिए निरंतर निःस्वार्थ रूप से कार्य करते रहे। अपनी प्रबल इच्छा शक्ति और दृढ़ निश्चय, संगठित करने की अद्वितीय क्षमता और इन सबसे बढ़कर अपने में तथा अपने विचारों में प्रगाढ़ विश्वास द्वारा उन्होंने जनता और राष्ट्र के लिए सदैव बेहतर कार्य करने का प्रयास किया।

इस प्रकार देश के राजनीतिक क्षितिज पर लोकमान्य तिलक का उदय सचमुच देश के जीवन में एक नया मोड़ लाने वाला था। भारतीय इतिहास के संकटपूर्ण दौर में उन्होंने भारतीय राजनीति को एक नए प्रकार का नेतृत्व प्रदान किया, जो बौद्धिक शक्ति संपन्न था, जिसका दर्शन सुस्पष्ट था और जो देशभक्ति से ओत-प्रोत था किन्तु इसकी जड़ें और शक्ति अशिक्षित और निर्धन जन समूह में निहित थीं। अभिजात्य, पाश्चात्य और कुछ शिक्षित वर्ग के राजनीतिक परिदृश्य से चलाये जा रहे स्वतंत्रता संघर्ष को करोड़ों गरीबों और दलितों से

शक्ति प्राप्त कर इसे जन आंदोलन में परिवर्तित करना, लोकमान्य तिलक द्वारा स्वतंत्रता आंदोलन को दी गई नई दिशा के कारण ही संभव हुआ। इस प्रकार 'तिलक युग' हमारे स्वतंत्रता आंदोलन में महत्वपूर्ण युग था।

तिलक के अविरत सामाजिक और राजनीतिक कार्यकलापों ने उनके स्वास्थ्य पर गहरा असर डाला। जुलाई, 1920 में अस्वस्थ होने के कारण मुम्बई में उनका इलाज चल रहा था। उनकी हालत बिगड़ती चली गयी और आखिरकार 1 अगस्त, 1920 की सुबह उन्होंने प्राण त्याग दिए।

पूरे देश में नेताओं और जनता ने लोकमान्य बाल गंगाधर तिलक के निधन पर गहरा दु:ख व्यक्त किया। महात्मा गांधी ने 4 अगस्त, 1920 के 'यंग इंडिया' में लिखा:

> हमारे जमाने के किसी और व्यक्ति का जनमानस पर इतना अधिक प्रभाव नहीं था। देश के हजारों लोगों की उन पर असाधारण श्रद्धा थी। नि:संदेह वह जनमानस के आदर्श थे। हजारों लोगों में उनके शब्द विधि ही माने जाते थे। हमारे बीच से एक महामानव चला गया है। एक शेर दिल पुरुष की गर्जना शान्त हो गई है। देश की जनता पर उनके प्रभाव का कारण क्या था? मैं समझता हूं कि इसका उत्तर बड़ा सरल है। देशभक्ति उनके मन-प्राण में बसी थी। मात्र देशप्रेम ही उनका धर्म था।

कलकत्ता* में 4-9 सितम्बर, 1920 को हुए कांग्रेस के विशेष अधिवेशन में निम्नलिखित संकल्प पारित किया गया:

> लोकमान्य बाल गंगाधर तिलक के निधन पर कांग्रेस गहरा दु:ख प्रकट करती है। उनका निष्कलंक जीवन, देश के प्रति उनकी सेवाएं और बलिदान, जनता के कल्याण के प्रति उनकी अपार निष्ठा, राष्ट्रीय स्वायत्तता के लिए संघर्ष में उनका दुष्कर प्रयास—ये सभी गुण हम लोगों के मन मस्तिष्क में उनकी सुखद स्मृति बनाए रखेंगे और हमारे देश की भावी पीढ़ियों के लिए शक्ति तथा प्रेरणा के स्रोत बने रहेंगे। देश के इतिहास के इस संकटपूर्ण दौर में कांग्रेस को उनका बुद्धिमत्तापूर्ण, सहायक तथा साहसी नेतृत्व और उनकी तेजस्वी देशभक्ति के ऊंचे आदर्शों और कठिनाई में आशीर्वचन जैसे सुझावों को कमी बहुत खलेगी।

---

*अब कोलकाता के नाम से जाना जाता है।